मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के कमलवत चरणों में सादर समर्पित भजन,,,

मैं तुमसे क्या मांगू,,,,,,

सर्वजीत सिंह

हे कण कण में ओ बसने वाले राम,
करूं मैं तेरी पूजा, नहीं है कोई दूजा,
मैं किससे क्या मांगू।
क्या मांगू मैं किससे क्या मांगू,,,,
हे कण कण में ओ बसने,,,,,,,

जब से जन्म जहां में पाया,
ठगती रही मुझे हर पल माया,
मृग तृष्णा है मन में जागी,
लोक लाज की बनी अनुरागी।
हे कण कण में ओ बसने,,,,,,

लाख जतन करूं पर ना छूटे,
माया मोह का बंध न टूटे,
मनवा हो हो कर ये पागल,
घट घट में वो आपको ढूंढे,
हे कण कण में ओ बसने,,,,,

एक बार आ दरश दिखा जा,
मेरे मन की प्यास बुझा जा,
अब मैं जग से जाना चाहूं,
आके मुझको राह दिखा जा।
हे कण कण में ओ बसने,,,,,

"मकड़ी का जाल"

मकड़ी का जाल है ये, जी का जंजाल है ये,
फंसना ना इसमें प्यारे, आफ0त में प्राण है ये ॥
करलें चालाकी जितना, होगी नादानी उतना,
दुनियाँ दारी का चक्कर, कैसा बवाल है ये ॥
मकड़ी का जाल है ये,
जी का जंजाल है ये,.....[1]
बचपन में खूब खेले, मस्ती में जवानी ठेले,
आया बुढ़ापा अपना,जी भर के आ अब रोलें॥
पगड़ी की आन जो है, अपनी पहचान वो है,
कैसे बचाएँ पानी , आफत में प्राण ये है ॥
मकड़ी का जाल ये है,
जी का जंजाल है ये.....[2]
माया का हैये बंधन, हमको जो लगता चन्दन,
रिस्ते-नातोंमें साथी, भूलाहै जग का जन-जन॥
पहला घंटा बचकाना, दूजा लगता अंजाना,
तीजा आयातो जाना,जगसे ना कुछ भी पाना॥
जीवन का ताल है ये,
मकड़ी का जाल है ये
फसना न इसमें प्यारे, मृत्यु का पैगाम ये है,
मकड़ी का जाल है ये .....[3]